समानांतर शिक्षा के कारण छात्र पर शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तनाव का मूल्यांकन

''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं''

शिक्षा शास्त्र में पीएच.डी की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रारूप

शोध निर्देशिका
जेवीएन प्रो. (डॉ.) मंजू शर्मा

शोधार्थी
जेवीएन मीरां धाकड़

शिक्षाशास्त्र संकाय
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,
जयपुर, (राज.)

सत्र–2020

समानांतर शिक्षा के कारण छात्र पर शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तनाव का मूल्याकंन

1. शोधार्थी का नाम – मीरां धाकड़

2. शोध का विषय

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के लिए अतिआवश्यक है। इसलिए शिक्षा को अनेक विद्वान सबसे महत्वपूर्ण मानते है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जिसमें ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा होती है। सार्थक ज्ञान को दूसरों को प्रदान करना मनुष्य का सार्थक गुण है। शिक्षा के द्वारा मानव जीवन में सम्पूर्णता आती हैं। शिक्षा का ज्ञान छात्रों को अपने भौतिक व आध्यामिक परिवेश को समझने के लिए है।

शिक्षा छात्रों की आन्तरिक बुद्धि और विकास को अग्रसर करने वाली प्रक्रिया है। वास्तविकता में शिक्षा छात्रों का बौद्धिक विकास कर जीवन को सभ्य और उन्नत बनाती है। शिक्षा समाज और व्यक्तिगत उन्नति के लिए अति आवश्यक है। शिक्षा के द्वारा ही छात्रों में विवेक, सोच, समस्याओं का हल, निराकरण की क्षमता, रचनात्मकता, बुद्धिमता, सकारात्मक दृष्टिकोण, संवेदनाओं, क्षमताओं, मूल्यों, विचार धाराओं और जीवन यापन के विशेष अभिरूचि पैदा करती है।

शिक्षा के निरन्तर विकास से छात्रों में सतत विकास की प्रक्रिया आरम्भ आवश्यक है। जॉन डयूीव के अनुसार ''**<u>शिक्षा भावी जीवन की तैयारी मात्र नहीं है वरन् जीवनयापन की प्रक्रिया है।</u>**''[1] शिक्षा छात्रों को अंधकार से, कर्मकाण्ड से मुक्तकर समाज को विकसित करती है। शिक्षा विचार और व्यवहार में तर्क पैदा करती है। जीवन में उचित मूल्यों की स्थापना करती है। छात्रों को ज्ञान और बुद्धि का विकास करने के लिए शिक्षा का दायरा बढ़ाना आवश्यक है।

छात्र जन्म से ही अपने आसपास की प्रेरणाओं और अनुभवों से धीरे–धीरे सीखता है। जिससें ज्ञान की परिधि विस्तृत होती है। वे अर्न्तदृष्टि को गम्भीर बनाते है। भावनाओं का परिष्करण और शिक्षा का वास्तविक स्वरूप समझौते है।

3. शोध का क्षेत्र :

शिक्षा शब्द की व्युत्पति संस्कृति की 'शिक्ष्' धातु से हुई है। जिसका शाब्दिक अर्थ है सीखना और सिखाना। इस अर्थ में शिक्षा में सब कुछ निहित है। हम समाज में रहकर सीखते है शिक्षा शास्त्री 'शिक्षा' शब्द का प्रयोग प्राय तीन रूपों में करते है जैसेः–

(i) ज्ञान

(ii) पाठ्यचर्या का विषय

(iii) व्यवहार में परिवर्तन लाने वाली प्रक्रिया

दरअसल, शिक्षा का तीसरा अर्थ 'अधिक उचित' प्रतीत होता है। समाज में रहकर जो भी हम कुछ सीखते है उसी के परिणाम स्वरूप जीवन सम्पादित होता है। शिक्षा से सभ्य और सामाजिक प्राणी बनता है। इसलिए शोधार्थी ने शोध प्रारूप में समानान्तर शिक्षा पर संक्षिप्त प्रकाश डाला है। जिसका विस्तृत विवेचन शोध प्रबन्ध में किया जाएगा।

4. प्रस्तावना :

शिक्षा शब्द अंगेजी भाषा के 'एजूकेशन' शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। 'एजूकेशन' शब्द की व्युत्पति लैटिन भाषा में एडुकेटम' शब्द से हुई। 'एडूकेटम' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। ई. व 'डूकेटम' 'ई' का अर्थ है अन्दर से। और 'डूकेटम का अर्थ है अग्रसर करना या आगे बढ़ाना। परिणामतः 'एजूकेशन' का अर्थ भीतरी ज्ञान को बाहर प्रदर्शित करना।

शिक्षा के मूल शब्द के अर्थ को निम्नलिखित प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है–

(i) Educere शिक्षित करना, बाहर निकालना।

(ii) Educatum शिक्षण कार्य, प्रशिक्षण देना।

(iii) Educare शिक्षित करना, विकास करना।

उक्त तीनों शब्दों में 'ई' और 'डूको' का प्रयोग किया गया है। लैटिन भाषा में 'ई' का अर्थ अन्दर से। तथा 'डूको' का अर्थ अग्रसर करना है। अतः 'Educo' का अर्थ हुआ अन्दर से अग्रसर करना। अर्थात् अन्दर से विकास करना। इस प्रकार Educo का भावार्थ **''छात्र की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास''** करना हुआ। फलतः इन तीनों शब्दों का अर्थ लगभग समान ही है।

प्रस्तुत शोध प्रारूप के आधार पर शिक्षा शब्द का अर्थ है ''शिक्षा छात्रों के अन्तर्निहित गुणों या शक्तियों का विकास करके उसे प्रशिक्षित करना है।[2]

सारॅरूप में शिक्षा को विद्यालय में चलने वाली प्रक्रिया माना जाता है। शिक्षा का प्रारम्भ प्रत्येक छात्र के लिये उस समय होता है जब वह विद्यालय जाना प्रारम्भ करता है। विद्यालय की समाप्ति पर शिक्षा भी समाप्त हो जाता है। साथ ही जो कभी स्कूल के में प्रविष्ट नहीं होता। उसे छात्र शिक्षित नहीं कहा जा सकता। उक्त शोध कार्य में कहा जा सकता है कि शिक्षा, का स्थान, शिक्षा, देने वाले अध्यापक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्र, समय से अपना पाठ्यक्रम निर्धारित करते हैं।

वर्तमान परिवेश में शिक्षा आजीविका चलाने वाली प्रक्रिया है। अर्थात् अपने जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त जो कुछ सीखता है। अनुभव करता है, वह सब शिक्षा के व्यापक अर्थ के अन्तर्गत ही माना जाता है।

इसी प्रकार विद्वान मानते है कि जीवन ही शिक्षा है। और शिक्षा ही जीवन है। व्यापक अर्थ में शिक्षा की व्याख्या करते है तो शिक्षा को किसी समय, स्थान, व्यक्ति विशेष और पाठ्यक्रम से बाध्य नहीं करते है। वरन् उसे मुक्त प्रक्रिया के

रूप में देखते है। छात्र समाज में सामाजिक सदस्यों, प्राकृतिक वातावरण, पशु पक्षी और जीव जन्तु आदि से जो कुछ भी सिखता है वही शिक्षा कहलाती है।

डिम्बल[3] के मतानुसार 'शिक्षा के अर्थ में वे सभी प्रभाव आते है जो छात्र को बाल्यावस्था से लेकर मृत्यु पर्यन्त प्रभावित करते हैं।''

शिक्षा ही छात्र के विकास का मूल आधार है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मदाता शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में व्यवहार में परिवर्तन कर उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। **पैस्टोलॉजी** ने घर को सर्वोतम स्थान माना और बालक की प्रथम पाठशाला भी माना है। माता ही बालक की प्रथम शिक्षिका होती है।

शिक्षा की दृष्टि से पारिवारिक वातावरण का प्रभाव बालक के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। घर क्योंकि घर में मानवीय जीवन का विकास होता है, घर में अनुकूल वातावरण और मनोवैज्ञानिक शैक्षिक वातावरण का होना आवश्यक है। एक अच्छे पारिवारिक वातावरण में माता पिता अपने बच्चों को पर्याप्त समय देते है जो उसकी शैक्षिक अभिरूचि के साथ–साथ व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होते है क्योंकि उसके समुचित विकास के लिए परिवार में भावनात्मक वातवरण का

निर्माण एवं सुरक्षा दोनों आवश्यक है जिस परिवार के बच्चों को घर में समय–सयम पर स्नेह मिलता रहता है।

उस घर के छात्र का भावनात्मक विकास भी अपेक्षाकृत अधिक अच्छा होता है। परिवार व घर का वातावरण भी छात्र की शिक्षा दीक्षा को प्रभावित करता है परिवार के सदस्य भी छात्र को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करते है। मध्यम वर्ग के लोग छात्र–छात्राओं की शिक्षा के लिए सबसे ज्यादा परेशान होते है। त्याग और मेहनत करते है। अनुसंधान से पता चलता है कि पारिवारिक वातावरण का छात्रों की भावनात्मक आदतों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तुत अध्ययन में समानान्तर शिक्षा के कारण छात्र पर शारीरिक, मानसिक और भावानात्मक तनाव का मूल्यांकन का अध्ययन किया जा रहा है। छात्रों की शिक्षा बुद्धि मानसिक प्रक्रिया और सुन्दर वातावरण पर निर्भर करती है। बच्चों के सम्बन्ध में जो नवीन वैज्ञानिक विचार और सिद्वांत है। उन्हें पूरे जोर से अपनाने पर हमें बच्चों के प्रति अपना व्यवहार बदलना पड़ेगा क्योंकि हमारे वातावरण का अर्थात् हमारे रहन–सहन का छात्रों के भावनात्मक के लगाव का असर पड़ता है।

(अ) तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण :

(i) समानान्तर शिक्षा

समानान्तर शिक्षा से तात्पर्य किसी कार्य को समान रूप से लागू करना है। यह प्रत्येक स्तर से प्रारम्भ होकर बार–बार संचालित होती है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार छात्रों की आदतें जीवन को प्रभावित करती है। इस कारण प्रत्येक स्तर पर छात्रों का परीक्षण होता है।

(ii) भावनात्मक तनाव

छात्र भी एक सामाजिक प्राणी है। अपनी प्रगति के लिए भावनात्मक लगाव का महत्वपूर्ण स्थान हैं। लगाव के अभाव में छात्र अपना विकास नहीं कर पाता है। यह चारित्रिक विशेषता है। जो कि मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सौन्दर्य बोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है।

भावनात्मक लगाव एक विश्वास है। जिसके आधार पर छात्र वरीयता प्राप्त करते हुये कार्य करता है। जीवन मूल्य ओस की बूंदों के सदृश्य नहीं है जो मौसम के अनुसार दिखाई दे। इसकी जड़ें प्रत्येक प्राणी में बहुत गहरी होती हैं तथा इसका वास्तविकता से गहरा संबंध है।

(ब) समस्या से सम्बन्धित उभरने वाले प्रश्न

(i) वर्तमान समान्तर शिक्षा की क्या प्रासंगिकता है?

(ii) शारीरिक मानसिक और भावनात्मक तनाव दूर करने के शैक्षणिक उपाय कौन–कौन से है।

(iii) नई शिक्षा नीति में छात्रों को तनाव से दूर रखने के क्या उपाय किये गए है।

(स) अध्ययन का औचित्य

वर्तमान में अध्ययन का सार्थक औचित्य ही परिलक्षित होता है। पुरानी शिक्षा नीति और नयी शिक्षा नीति में यही मूलभूत अन्तर है। स्वर्गीय प्रधानमंत्री **श्री राजीव गांधी जी** अपने कार्यकाल में नई शिक्षा नीति लेकर आए थे। वर्तमान में जिसके तहत ही देश में पढ़ाई संचालित हो रही है। परन्तु वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'नई शिक्षा नीति' की घोषणा की है। जिसके तत्व शिक्षा के ढाँचे में कई अमूल–चूल परिवर्तन होने की पूर्ण संभावना है।

नई शिक्षा नीति का पाठ्यक्रम सन् 2022 से प्रारंभिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक में परिवर्तन होगा। जिससे कई बिन्दुओं को वर्तमान सन्दर्भ में पढाया जाना अधिक सार्थक होगा। शोधार्थी ने उपर्युक्त शोध कार्य में सूची तथ्यों को शामिल करने का प्रयास किया हैं।

(द) शोध कार्य के उद्देश्य

(i) समानान्तर पाठ्यक्रम के तहत छात्रों में नई शिक्षा नीति के मूल अन्तर का अध्ययन करना।

(ii) वर्तमान में छात्र–छात्राओं पर पड़ने वाले शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तनाव का अध्ययन करना।

(iii) शिक्षा के प्रति छात्रों का दृष्टिकोण सकारात्मक या नकारात्मक का अध्ययन करना।

(iv) वर्तमान शिक्षा नीति छात्रों के हित में है या नहीं का विस्तारित अध्ययन करना।

5. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन :

(i) **आर.सी. सास्वत (2013)** – भारतीय उच्च शिक्षा में उदीयमान पर्यावरण और उसके गुणवत्ता स्तर को बनाये रखने पर एक विश्लेषण का अध्ययन।

(ii) **खण्डवार, कमलेश कुमार (2014)** – शिक्षा का समाज के विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

(iii) **भट्टाचार्य जी. सी. (2014)** – समानान्तर शिक्षा के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों एवं उनके माता–पिता के मध्य जागरूकता के स्तर में अन्तर का अध्ययन करना।

(iv) **जे. राठौड़ (2015)** – वर्तमान शैक्षिक रणनीति के विकास के विशेष संदर्भ में प्राथमिक स्तर पर बच्चों की शिक्षा की उपलब्धि का अध्ययन।

(v) **शमी सुनिता (2015)** – प्रारम्भिक स्तर के विद्यार्थियो में शिक्षा पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन। इन्होंने विद्यार्थियों में शिक्षा पाठयक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करने के बाद पाया कि शिक्षा के प्रति छात्र सकारात्मक है।

6. समस्या कथन :

वर्तमान शोध कार्य का समस्या कथन निम्नलिखित प्रकार से है:–

''समानांतर शिक्षा के कारण छात्र पर शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तनाव का मूल्याकंन''

7. शोध कार्य की परिकल्पनाएँ –

प्रेषित तथ्यों की व्याख्या करने के लिए या घटनाओं की भविष्यवाणी करने के लिए परिकल्पनाओं के बिना न ही कोई प्रयोग संभव हो सकता है, और न ही वैज्ञानिक विधि से अनुसंधान ही संभव होता है। वास्तव में परिकल्पना के अभाव में अनुसंधान कार्य एक उद्देश्यहीन प्रक्रिया है।

परिभाषा–''**परिकल्पना परीक्षण के लिए प्रस्तुत की गई एक प्रस्थापना है।'' परिकल्पना एक ऐसी प्रस्थापना है जिसकी सत्यता को सिद्व करने के लिए उसकी परीक्षा की जाती है।**

(i) वर्तमान में छात्रों में वास्तविक दबाव शिक्षा को लेकर नहीं है बल्कि व्यक्तिगत कारणों से है।

(ii) शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक लगाव पढ़ाई में बाधा उत्पन्न नहीं करता है।

(iii) प्रतिस्पर्द्धा के युग में छात्र पर तनाव स्वभाविक है, परन्तु मानसिक तनाव समस्या का हल नहीं हो सकता है।

(iv) नई शिक्षा नीति के प्रभावी परिणाम एक शीध्रगामी नहीं हों सकते हैं। छात्रों में तनाव उत्पन्न होना आवश्यक नहीं है।

(v) शिक्षा के प्रति जागरूकता के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

8. शोध कार्य की विधि :

शोध विधि से तात्पर्य एक निश्चित व्यवस्था के अनुसार कार्य करने की प्रणाली से है, एवं वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन द्वारा सत्य की खोज करना होता है।

प्रस्तुत अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। परीक्षणों से प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से विश्लेषण कर अध्ययन किया जाएगा।

(अ) जनसंख्या का न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध में 600 छात्रों पर सर्वेक्षण किया गया है।

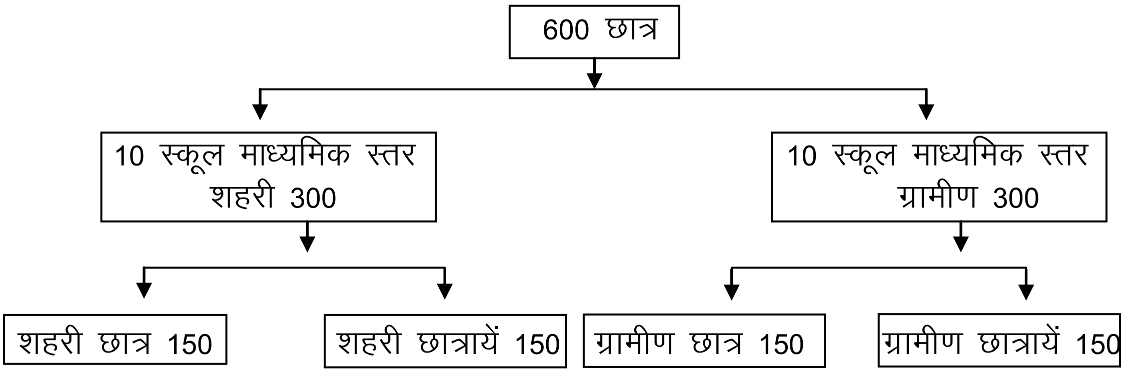

(ब) अध्ययन के चर–

पोस्टमैन तथा ईगन के अनुसार : ''चर वह लक्षण या गुण हैं जिसके अनेक प्रकार के मूल्य हो सकते है।''

चर दो प्रकार के होते हैं–

- **स्वतंत्र चर** – स्वतंत्र चर वे होते है जो स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं।

- **आश्रित चर –** आश्रित चर के अन्तर्गत उन चरों को सम्मिलित किया जाता है, जो किसी के अधीन आते हैं।

(स) शोध समस्या में प्रयुक्त उपकरण :

प्रत्येक शोध की महत्वता उपकरण पर निर्भर करती है। क्योंकि उनकी उपयुक्तता वैधता और विश्वसनीयता पर ही शोध की विश्वसनीयता एवं वैधता निर्भर करती है। इससे प्राप्त निष्कर्षो की क्षमता द्वारा व्यवहारिक और उपयोगिता निर्धारित होती है। अतः प्रत्येक शोधकार्य में उपर्युक्त उपकरणों का चयन और विकास कार्य आवश्यक है।

उपकरण दो प्रकार होते है–

- स्वनिर्मित उपकरण
- मानकीकृत उपकरण

- **स्वनिर्मित उपकरण** : स्वनिर्मित उपकरण से तात्पर्य उन उपकरणों से है, जिन्हें पूर्व में किसी विशिष्ट उद्देश्य को लेकर बनाया जाता है। बड़े न्यादर्श पर जिनके मानक ज्ञात किये हुए होते है, जो शोधकर्ता द्वारा विशेष परिस्थितियों में निर्मित किए हुए होते है। इन उपकरणों की विश्वसनीयता व वैधता ज्ञात की जाती है।

- **मानकीकृत उपकरण** : मानकीकृत उपकरण से तात्पर्य उस उपकरण से है जो एक बहुत बड़े न्यादर्श पर उसे प्रशासित कर उसके परिणाम का मूल्यांकन करते है और विश्लेषण करते हैं। ये प्रशिक्षण विश्वसनीय व वैध होते है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है।

(द) शोध अध्ययन में सांख्यिकी विधिः

परीक्षणों की सहायता से संग्रहित किए गए आंकड़ों से प्राप्त सूचनाऐं जटिल असम्बद्ध तथा बिखरे रूप में होती है। उचित विवेचना के लिए सामग्री को संगठित करना आवश्यक है। इसके लिए सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया जाता है।

- मध्यमान
- प्रमाप विचलन
- टी टेस्ट

न्यादर्श चयन की विधि :

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा यादृच्छिक विधि से न्यादर्श का चयन किया जायेगा।

आंकड़ों के स्त्रोत :

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा आंकड़ों का एकत्रीकरण का माध्यम प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों पर निर्भर होगा।

(य) शोध की परिसीमाएँ :

यह शोध कार्य शिक्षा के कारण छात्र पर शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तनाव के मूल्यांकन तक सीमित है।

9. संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल रामनारायण, ''मनोविज्ञान एवं शिक्षा के मापन एवं मूल्याकंन'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 1970।
2. ओसवाल भार्गव ''सांख्यिकी विधियों' रमेश बुक डिपो जयपुर 1996।
3. गुर्जर डॉ. राम कुमार तथा जाट डॉ. वी.सी. ''मानव एवं स्वच्छ भारत अभियान'' पंचशील प्रकाशन, जयपुर 2002।
4. गुडबार स्केटस ''मैथेडोलॉजी ऑफ एजुकेशन रिसर्च एप्लेट्स सेन्चुरी कम्पनी, अनुसंधान परीक्षण परिषद न्ययार्क, 1968।
5. कपिल डॉ. एच. के भार्गव, ''अनुसंधान विधिया शिक्षा का मनोविज्ञान'' बुक हाउस, आगरा, 1996।
6. लवानिया एम.एम. ''सामाजिक अन्वेषण में सर्वेक्षण पद्वतियों'' रिसर्च पब्लिकेशन्स जयपुर, 1992।
7. नागर के एन ''सांख्यिकी के मूल तत्व'' मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ, 1982
8. सरीन एवं सरीन ''शैक्षिक अनुसंधान की विधियां'' अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, 2006।
9. सुफिया एस.पी. ''शैक्षिक अनुसंधान के विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 1996।
10. शर्मा एस.एन. ''शिक्षा मनोविज्ञान'' साहित्य प्रकाशन आगरा 1995।
11. शर्मा दी एन ''शिक्षा मनोविज्ञान'' साहित्य प्रकाशन, आगरा 1992।

12. शर्मा के.के. शर्मा प्रभा, त्रिवेदी सुधा ''शिक्षा शल्प कोष स्वाति पब्लिकेशन जयपुर 2005।

13. शर्मा आर. सी. ''एनवायरमेण्टल एजुकेशन'' मैट्रोपोलियटन बुक कम्पनी नई दिल्ली 1981।

14. श्री वास्तव तथा शर्मा वेद प्रकाश ''शिक्षा अनुसयान में सांख्यिकीय प्रयोग, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 1991।

15. वर्मा प्रीति तथा श्री वास्तव डी.एन. ''मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी'' विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 1991।

16. व्यास हरशिचन्द्र शर्मा गोरा व व्यास कैलाश ''बढ़ती जनसख्ंया बिगड़ता स्वच्छ भारत अभियान'' कृष्ण जनसेवी एण्ड कम्पनी बीकानेर 1992